International Journal of Academic Research and Development
ISSN: 2455-4197, Impact Factor: RJIF 5.22
www.academicsjournal.com
Volume 2; Issue 3; May 2017; Page No. 349-350

बैगा जनजाति के पर्व–त्योहार–महत्व, स्वरुप एवं परिवर्तन के संदर्भ में एक अध्ययन

[1]डॉ0 पारूल गुप्ता, [2]डॉ0 अलका डेविड

[1] पोस्ट डाक्टरेट, फैलोशिप फार विमेन बाई यूजीसी सरोजनी नायडू शास महा0 वि0 भोपाल, मध्य प्रदेश, भारत।
[2] ओ0एस0डी0, उच्च शिक्षा विभाग, भोपाल, मध्य प्रदेश, भारत।

सारांश
बैगा जनजाति अपने आदिम विशेषताओं के आधार पर म.प्र. में विशेष पिछड़ी जनजाति के दर्जे में आता है। नर्मदा नदी के तट पर बसे ये जनजाति अपने आपको प्रकृति पुत्र मानते हैं अपने जीवन शैली के विविधताओं के कारण ये हमेशा ही आकर्षण का केन्द्र रहें हैं।। सभ्य समाज के सम्पर्क में आने के कारण ये भले ही बदल रहें हो लेकिन आज भी इनके पर्व और त्यौहारों में अत्यधिक परिवर्तन नहीं मिला है। ये जनजाति अपने पर्व–त्यौहारों को बहुत ही हर्षोउल्लास के साथ मनाते हैं।

मूल शब्दः बैगा जानजाति, पर्व–त्योहार

प्रस्तावना
विश्व में कोई भी देश, जाति समुदाय अथवा कबीला ऐसा नहीं है जिसकी संस्कृति में पर्व–त्योहार मनानें की परम्परा न हो यद्यपि पर्व–त्यौहार मनाने की परम्परा उनके क्षेत्रीय, सांस्कृतिक–भौगौलिक रीति–रिवाज, मानसिक सोच, विकास का स्तर इत्यादि अनेकों कारणों से भिन्न हो सकते हैं। लेकिन पर्व–त्यौहार मनाने के उद्देश्यों के पीछे जो उनकी सोच होती है वह प्रायः ही भिन्न होती है किसी भी आदिवासी समाज में पर्व–त्योहार उनकी सांस्कृतिक धरोहर होती है जिसे वो पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित करते हैं। उनकी पीढ़ियां भले ही पर्व त्यौहारों के पांरम्परिक स्वरुप में परिवर्तन कर रही हों लेकिन उनकी भावना सामान्य रुप से यथावत ही होते हैं।
बैगा जनजाति के जीवन के केन्द्र में ही कृषि कर्म है। वे निरन्तर जंगल व कृषि कर्म के सम्पर्क में रहते हैं। जिसे उनके पर्व त्यौहार में प्रकृति से गहरा तादात्मय देखने को प्राप्त होता है। यही कारण है उनके पर्व त्योहारों पर प्रकृति की अमिट छाप देखने को प्राप्त होती है।
राबिन डी त्रिभुवन नें त्योहार का परिभाषा इस प्रकार दी –Festival is an occassions that reinforce the presence of god in the life of the individual and the family and bind them to the community. They are also moments for young people to absorb and be part of age-old, yet still vibrant and living traditions.

बैगा जनजाति के पर्व त्योहार
जवारेः– बैगा जनजातियों में यह पर्व देवी पर्व के रूप में मनाया जाता है। इस पर्व को चैत्र से जेठ माह तक तथा कुँवार महीने में खैर माई के मढ़ियां में नई टोकनी अथवा खप्पर में गेहूँ के बीज बोये जाते हैं जिसे जवारे बोना कहते हैं। यह जवारे अपनी मान्यता के अनुसार निजी तौर पर घरों में भी बोए जाते हैं नवे दिन जवारों को उखाड़ कर नाचते गाते नागड़ा ढोल, जलूस के साथ नदी–नाले में विसर्जित कर देते हैं तथा देवी देवताओं को नारियल, बकरा, काली मुर्गी, या सुअर की बलि देते हैं। तथा बलि को आपस में बांटकर खाते हैं।

छाया ढारनाः– हिन्दू धर्म के पितृ विसर्जन की तरह इन जातियों में भी वर्ष में एक बार पितरों का स्मरण किया जाता है। जेठ माह के शुक्ल पक्ष में सोमवार, बुधवार, शुक्रवार को छाया ढारी जाती ये दिन बैगा के लिए देवी–देवताओं के विशेष दिन होते हैं। तथा इस दिन समान गोत्र के सभी बैगा परिवार से एक–एक मुर्गी इकट्ठी की जाती है उसकी बलि के उपरान्त उसी गोत्र के लोग खाते हैं।

बिदरी– बिदरी जेठ या आषाढ में बीज बोने के पहले बीजों की पूजा की जाती है। जिससे उनकी फसल अच्छी और कोई पशु–पक्षी न खाये । मानसून के स्थिति के आधार पर बिदरी का दिन शुक्ल पक्ष में निश्चित होता है। इसमें गॉव के घरों के मुखिया महलोन के पत्ते के दोनों में बोये जाने वाले बीजों को लेकर ठाकुर देव के स्थान पर जाते हैं जहां देवार पूजा करता है। तथा वहॉ अनाज का ढेर बनाया जाता तथा ठाकुर देव की मुर्गी के बलि दी जाती है व उसका खून अनाज के ढेर में मिला दिया जाता है। ढेर में से अनाज गांव के सभी कृषक बैगा घर ले जाते हैं व बोयें जाने वाले बीचों में मिला देते हैं। बिदरी में समान्यतः महिलाएं भाग नहीं लेती हैं।

हरेली– बैगा हरेली त्योहार सावन के अमावस्या को मानते हैं। इसे मनाने के लिए बैगा अपने घर व सार की लीपा–पोती करते हैं। तथा घर का सयाना अमावस्या के दिन बडे सेवेरे उठकर जंगल से झीरी भिलवा की डाल, जोगी लटी, हंसिया डाफर तथा भॅवर माल की डालियॉ काटकर लाता है। तथा स्नानआदि के बाद इन सभी को मिलाकर छोटे–छोटे बंडल घर के दरवाजे, सार (जानवरों को रखने का स्थान) खेत आदि में खोस कर धूप बत्ती करता है। तथा गॉव का देवार प्रत्येक घर–घर जाकर डाल खोसता है तथा तथा नेग भी लेता है। इस दिन बैगा अच्छा भोजन तेल रोटी व बबरा बनाते हैं। यह त्योहार अच्छी भरपूर फसल के लिए होती है।

नवाखानी/नवाफसलः– नवाखानी का पर्व फसल कटाई का पर्व है। बैगा देवी–देवाताओं के कृतज्ञता के लिए यह पर्व मनाते हैं। बैगा अपनी मान्यता के अनुसार नई फसल का भोग पहले देव–देवताओं और पितरों को लगाने के पश्चात् ही उसे उपभोग करते हैं। स्याली फसल (खरीफ) की नवाखाई जरुर की जाती है। नवाखाई के एक दिन पूर्व घर का सयाना देवताओं और पुरखों को नवा खाने का न्योता देता है। तथा उनके नाम पर ककडी के फूल, तुरई, आदि को तोडकर रखता है। घर की लिपाई पोताई के बाद दाल भात में

नया अनाज मिलाकर बनाते हैं। घर में आटे का चौंक पूरकर दिया अगरबत्ती कर खाद्य पदार्थ देवताओं और पुरखों को अर्पित करते हैं।

दशहराः– दशहरा को बैगाओं का नृत्य आरम्भ करने का त्यौहार कहा जा सकता है। बैगा कुँवार दसवीं को दशहरा या दशेरा मनाते हैं। हिन्दूओं के दशहरा से इनका कोई संबंध नहीं केवल तिथि साम्य है। दशेरा के दिन गॉव के सभी लोग शाम को गांव की चौपाल पर इकट्ठे होते हैं। चौपाल के बीचो–बीच एक बांस गाड़ा जाता है जिसके उपरी सिर पर मोरपंख बांधा जाता है। देवी–देवताओं की पूजा की जाती है। बांस के किनारे–किनारे युवक–युवतियां नृत्य करतें हैं। इस दिन ग्राम के बैगा युवकों के नृत्य दल को मुखिया पहचान स्वरूप झंडा देता है और यही झंडा लेकर बैगा युवकों का दल गांव–गांव नृत्य करनें जाता है।

दिवारी–(दीवाली)ः– दीवाली बैगाओं का निजी त्योहार नहीं है इस दिन आटा या मिटटी का दिया जलाकर देवी–देवताओं के सामने रखते हैं। शाम को जंगल से लौटी गाय का मुँह धुलाते हैं तथा उसे भाल कुम्हड़ा, खिलाते हैं। रात्रि में परिवार के सभी लोग दाल भात और सुअर का मांस खाते हैं।

छेरताः– छेरता बैगा बच्चों का त्योहार है। गांव के टूरा–टूरी (लडका/लड़की) हाथ में छडी व साधु वेश में घर–घर छेरता (अनाज–नमक, मिर्ची) आदि खाद्य सामग्री मांग कर लाते है तथा नदी किनारे जाकर उस अनाज को पकाते हैं तथा सभी बच्चे खाना पीना करके घर लौट आ जाते हैं। यह पर्व पूस माह की पूर्णिमा के दिन मनाया जाता है।

फागः–होली हिन्दूओं को देखा–देखी मानए जाने वाला पर्व है। पूर्णिमा के दो चार दिन पहले सेमल, तेन्दू या बांस का डांडा जंगल से काटकर लाया जाता है। गांव के सार्वजनिक स्थान पर गांडा जाता है डंडा गाड़ने के पहले गड्ढे में मुर्गी का अंडा, अंगुली का छल्ला एवं पैसा रखा जाता है। डंडे के पास रात भर फाग गाते हैं, नाचते है और दारू पीते हैं। पूर्णिमा की रात के अंन्तिम पहर में गॉव का मुकद्दम होली दहन करता है। होली दहन की राख को एक दूसरे को लगा कर होली का शुभारम्भ करते हैं।

अध्ययन का उद्देश्यः– बैगा जनजातियों के पर्व त्योहार के महत्व, स्वरुप एवं परिवर्तन का अध्ययन करना।

परिकल्पनाः– बैगा जनजातियों के पर्व त्योहार के महत्व, स्वरुप में परिवर्तन आ रहा है।

अध्ययन विधि– अध्ययन का क्षेत्र– बैगा जनजाति का प्रमुख जिला डिण्डोरी के चाडा व धूरकुटा गांव को लिया गया है।

तथ्यों का संकलन– तथ्यों के संकलन हेतु द्वितीयक व प्राथमिक दोनों ही प्रकारों से प्राप्त जानकारी को लिया गया है। प्राथमिक जानकारी हेतु प्रत्यक्ष अवलोकन एवं साक्षात्कार विधि, एकल तथा समूह चर्चा तथा द्वितीयक जानकारी पूर्व के शोध, किताबें, लेख, शोध पेपर इत्यादि से लिया गया है।

निष्कर्ष–बैगा जनजाति का मुख्य धारा में जुडने के वजह से उनके पर्व–त्योहारों में बदलाव होना कोई अनहोनी की बात नहीं रह गयी है। बैगा जनजाति पर हिन्दू संस्कृति की छाया स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है। बैगा हिन्दू संस्कृति के त्योहार राखी, दीवाली, संकरात, आदि मनाने लगे हैं। तथा उनके पारंम्परिक त्योहारों के स्वरुप में भी परिवर्तन देखने को प्राप्त हो रहा है। बैगा फाग (होली) के पर्व पर अब रंगो का प्रयोग करने लगे हैं तथा त्योहारों में प्रयोग होने वाले वस्तुओं को ये बनाने के बाजार से खरीदने लेगे हैं। पारम्परिक रूप से पहने जाने वाले परिधानों में भी परिवर्तन आया है। अतः निष्कर्ष स्वरुप ये कहा जा सकता है कि बैगा जनजातिय के पर्व–त्योहार मनाने की कला पर हिन्दू संस्कृति के प्रभाव के कारण आंशिक रूप से बदलाव आया है।

संदर्भ–

1. डॉ. चौरसिया विजय, प्रकृति पुत्र बैगा (2009) हिन्दी ग्रन्थ अकादमी भोपाल पेज नं. 52–56
2. डॉ. जैन कल्पना, बैगा जनजाति की सांस्कृति, परम्परा में लोकपर्वो का महत्व, स्वरुप परिवर्तन, आदिम जाति अनुसंधान एवं विकास संस्थान 35 श्यामला हिल्स, भोपाल म.प्र. पेज नं. 8–32
3. उपाध्याय विजय शंकर, डॉ. पाण्डेय गया जनजातीय विकास (2010) मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी भोपाल
4. डॉ0 तिवारी शिव कुमार, डॉ. शर्मा श्रीकमल मध्यप्रदेश की जनजातियां समाज एवं व्यवस्था (2009) मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी भोपाल पेज नं. 124–129
5. डॉ. तिवारी शिवकुमार, मध्यप्रदेश की जनजातीय संस्कृति (2010) मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी भोपाल